

# डॉ. डैनियल के. डार्को, लूका रचित सुसमाचार, सत्र 9, गलील में यीशु का मंत्रालय , भाग 3, यीशु की शिक्षा और चमत्कार

© 2024 डैन डार्को और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डैन डार्को और ल्यूक के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, गलील में यीशु का मंत्रालय, भाग 3, यीशु की शिक्षा और चमत्कार।

बाइबिल ई-लर्निंग अध्ययनों में ल्यूक के सुसमाचार पर श्रृंखला में आपका स्वागत है।

अब तक, हमने लूका के सुसमाचार के कुछ अध्यायों को कवर किया है, और इस चरण में, हम अध्याय 6 को देखना शुरू करने जा रहे हैं। इस विशेष व्याख्यान में, हम अध्याय 6 और अध्याय 7 को कवर करने का प्रयास करने जा रहे हैं। तो, आइए कुछ ऐसी चीजों को देखना शुरू करें जो चल रही हैं। फिर भी, यीशु उत्तर के व्यापक क्षेत्र में गलील में है जहाँ वह बड़ा हुआ। उनका पालन-पोषण नासरत में हुआ था।

कफरनहूम उस समय का सबसे बड़ा शहर था और यीशु उस बड़े क्षेत्र में सेवा करेंगे। इसलिए, अध्याय 6 और 7 अभी भी गलील में होने वाली घटनाओं का हिस्सा हैं। तो आइए अध्याय 6 को फिर से पढ़ें 6:1 से 5 और इसे यहीं से शुरू करें।

सब्त के दिन, जब वह अनाज के खेतों से होकर जा रहा था, उसके शिष्यों ने अनाज की कुछ बालें उठाईं और उन्हें हाथों से रगड़कर खाया, लेकिन कुछ फरीसियों ने कहा कि तुम वह क्यों कर रहे हो जो सब्त के दिन करना उचित नहीं है? यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि क्या तुमने नहीं पढ़ा कि दाऊद ने भूख लगने पर क्या किया? वह और उसके साथी कैसे परमेश्वर के घर में घुसे और उपस्थिति की रोटी ली और खाई जिसे खाना याजक के अलावा किसी और के लिए उचित नहीं है और उसने अपने साथियों को भी दिया और उनसे कहा कि मनुष्य का पुत्र सब्त के दिन का प्रभु है। आप पिछले व्याख्यान में अंत में उल्लेख किए गए मेरे उल्लेख को देख सकते हैं या इस अंश को संक्षेप में पढ़ सकते हैं, लेकिन यहाँ, क्योंकि हम 6 और 7 को कवर कर रहे हैं, हम इसे फिर से देखना शुरू करते हैं। पिछली चर्चा में मैंने जो मुख्य बिंदु उठाया था, वह यह था कि यहाँ, यीशु यह स्थापित कर रहे हैं कि वह कुछ ऐसे काम करने में सक्षम हैं जिन्हें फरीसी आमतौर पर व्यवस्था के कारण असंभव कहते हैं।

यहाँ मुख्य मुद्दा सब्त के दिन कानून का पालन करना है। यीशु का फरीसियों से विवाद यह है कि महत्वपूर्ण मुद्दे पर एक अपवाद है, और अपवाद के साथ एक मिसाल है। मिसाल यह थी कि दाऊद किसी बिंदु पर अपवाद होने में सक्षम था, और वह भी हो सकता था।

वह सब्त के दिन का स्वामी होने के कारण उसे उस अपवाद खंड को लागू करने का अधिकार देता है। अध्याय 6, श्लोक 6 से 11 में, हम चमत्कारों का एक और विवरण जारी रखते हैं जिसमें इस स्थान पर यीशु भी शामिल होंगे। वह फरीसियों और शास्त्रियों से निपटेगा। एक अन्य सब्त के दिन, जैसा कि मैंने पद 6 में पढ़ा, वह आराधनालय में जाकर उपदेश दे रहा था, और वहां एक मनुष्य था जिसका दाहिना हाथ सूखा हुआ था, और शास्त्री और फरीसी उस पर घात लगाए हुए थे कि देखें कि वह सब्त के दिन लोगों को चंगा करता है कि नहीं ताकि वे उस पर दोष लगाने का कोई कारण पाएं परन्तु वह उनके मन की बातें जानता था, और उसने सूखे हाथ वाले मनुष्य से कहा, आकर यहां खड़ा हो, और वह उठकर खड़ा हो गया, और यीशु ने उससे कहा, मैं तुझ से पूछता हूं, क्या सब्त के दिन भलाई करना या बुराई करना, कि जीवन मिले या नाश हो और उन सभी को देखने के बाद उसने उससे कहा, अपना हाथ बढ़ाओ और उसने ऐसा ही किया और उसका हाथ ठीक हो गया परन्तु वे क्रोध से भर गए और एक दूसरे से चर्चा करने लगे कि हम यीशु के साथ क्या करें।

फरीसी क्रोध से भर गए, और उन्होंने चर्चा की कि वे यीशु के साथ क्या कर सकते हैं। मुझे यह विशेष घटना विशिष्ट सांस्कृतिक कारणों से पसंद है, जिसे मैं यहाँ उजागर करूँगा क्योंकि यह एक ऐसा सांस्कृतिक मुद्दा है जो मुझे हमारे पारंपरिक पश्चिमी माहौल में यीशु और शास्त्रियों के बीच नहीं मिलता।

तो, चलिए मैं आगे बढ़कर आपको इनमें से कुछ बातें बताना शुरू करता हूँ। सबसे पहले, यीशु फरीसियों और शास्त्रियों के विचारों को जानता था, और उनके विचार उसे दोषी ठहराने और यह स्थापित करने की कोशिश कर रहे थे कि शायद उसने सब्त के पालन से संबंधित कुछ नियमों को तोड़ा है। लेकिन यीशु ने इस अंश में कुछ उल्लेखनीय किया।

उसने सूखे हाथ वाले आदमी को बुलाया और उसे खड़ा होने के लिए कहा, क्योंकि वह जानता था कि फरीसी और शास्त्री उसे दोषी ठहराने का मौका तलाश रहे थे। इसलिए उसने उससे पूछा, उसने कहा, अरे, आओ, आदमी, खड़े हो जाओ, और उसने कहा, यहाँ आओ। तो, वह आदमी आया, और खड़ा हो गया।

अगर आप अमेरिका, ग्रेट ब्रिटेन, जर्मनी, स्विटजरलैंड या इनमें से किसी भी देश से पढ़ते हैं, तो आपको समझ नहीं आएगा कि यहाँ क्या चल रहा है। लेकिन यह मेरी दुनिया है, मुझे आपके साथ इसका मज़ा लेने दीजिए। यह सम्मान और शर्म की संस्कृति है।

वह जानता है कि यहाँ एक बड़ा मुद्दा है। शास्त्री और फरीसी उसे पकड़ना चाहते हैं और उसे बहुत ही भयानक स्थिति में डालना चाहते हैं, चाहे उस कानून को तोड़ना कैसा भी क्यों न हो। लेकिन वह उन्हें एक अकल्पनीय तरीके से शर्मिंदा करने जा रहा है।

अगर आप संस्कृति को नहीं समझते हैं, तो यह आपके लिए समझ में नहीं आएगा। तो, कल्पना करें कि फरीसी और शास्त्री आराधनालय में खड़े हैं, और फिर वह उस आदमी को बुलाता है, और कहता है कि खड़ा हो जाओ। और वह आदमी अब खड़ा हो जाता है, और हर कोई देख रहा है।

वह इस विषय पर लोगों का ध्यान आकर्षित करता है, और फिर वह कहता है कि ओह, अगर सब्त के दिन कोई क्या कर सकता है, इसके लिए अपवाद हैं, तो उन अपवादों में से एक क्या है, जीवन बचाना या जीवन न बचाना। फरीसी ठीक से जानते हैं कि एक मुख्य अपवाद जीवन बचाना है। ठीक है, तो वह उनके दिमाग में खेलता है, और आराधनालय में लोग अपने दिमाग में सोचते हैं, ओह हाँ, और शायद कोई यहाँ सब्त के कुछ नियमों का उल्लंघन कर रहा है।

लेकिन फिर वह उस आदमी को बुलाता है कि वह आकर फरीसियों का सार्वजनिक तमाशा बनाए। यहाँ वह जो कर रहा था वह यह है कि अगर वह उस आदमी को ठीक कर देता है, तो वह उन्हें बाद में शर्मिंदा कर देगा। यह उन खामोश चीजों में से एक है जिससे वह उन्हें शर्मिंदा करने जा रहा है। वे शर्मिंदा और क्रोधित महसूस करने जा रहे हैं, लेकिन पाठ स्पष्ट रूप से यह नहीं दिखाता है क्योंकि अब और तब के बीच सांस्कृतिक अंतर है।

इसलिए, यीशु उस आदमी को सामने लाते हैं, खड़े होते हैं, और उस आदमी पर दाग लगाने के लिए बीच में खड़े हो जाते हैं, और फिर यीशु का सवाल कोई जवाब न देने का अवसर प्रदान करेगा। वास्तव में, जिस तरह से उन्होंने सवाल पूछा है वह ऐसा है कि आप इसका उत्तर नहीं दे सकते। उन्होंने कहा कि मैं तुमसे पूछता हूँ कि सब्त के दिन भलाई करना या बुराई करना उचित है? जीवन बचाना या उसे नष्ट करना? शास्त्रियों और फरीसियों के पास यह कहने का कोई अवसर नहीं है कि अरे, अब मेरा हाथ है। क्या मैं उस प्रश्न का उत्तर दे सकता हूँ? नहीं, उन्होंने आपको बस या तो या या या दिया है, और उन्हें क्या कहना चाहिए? हाँ, मैं समझ सकता हूँ कि आप कहाँ जा रहे हैं। आप बस इतना ही कह सकते हैं।

लेकिन वह आदमी जिसके हाथ में स्पष्ट निशान है, वहीं खड़ा है और यीशु ने उन्हें पकड़ लिया। अब वह उस आदमी को ठीक करता है। वह उनके सामने खड़े आदमी को ठीक करता है और उन्हें शर्मिंदा करता है।

आराधनालय में हर किसी को यह जानना चाहिए कि फरीसी और शास्त्री गलत हैं। किसी की जान बचाई जानी है, और भगवान ने चमत्कारी कृत्यों के माध्यम से इसे मान्य किया है। वह कहता है कि अपना हाथ बढ़ाओ, और वह आदमी अपना हाथ बढ़ाता है, और वह ठीक हो जाता है।

यदि आप एक फरीसी हैं, तो यही समय है कि आप इस तरह से आगे बढ़ें। कोई आश्चर्य नहीं कि उस पेरिकोप के अंत में हमें बताया गया कि वे क्रोधित थे। लेकिन मुझे यह पसंद है।

मुझे यह पसंद है। तो, आइए इस विशेष अंश के बारे में थोड़ी बात करें क्योंकि यह उन अंशों में से एक है जिसे हम कभी-कभी अनदेखा कर देते हैं और वह सब, लेकिन मुझे इसका सम्मान और शर्म की संस्कृति वाला घटक पसंद है जहाँ कभी-कभी आप लोगों को इस तरह से शर्मिंदा करते हैं कि बाहरी लोगों को पता भी नहीं चलता। जो लोग जानते हैं कि क्या हो रहा है, वे ठीक से जानते हैं कि क्या हो रहा है, और वे सभी इस बात पर सहमत हैं कि कुछ बुरा हुआ है, और यहाँ तक कि पर्यवेक्षक भी यह नहीं देख सकते कि वास्तव में क्या हो रहा है।

चारों ओर देखते हुए, पद 10 में, वह कहता है कि अपना हाथ बढ़ाओ, और उसने ऐसा किया, और उसका हाथ ठीक हो गया। पद 11 देखें। लेकिन वे क्रोध से भर गए और एक दूसरे से चर्चा करने लगे कि वे यीशु के साथ क्या कर सकते हैं।

जैसा कि हमें बताया गया है, सब्त के दिन आराधनालय में यीशु का उपदेश देना एक प्रथा है। इस विशेष घटना में फरीसी और शास्त्री एक मिशन के साथ वहाँ थे। वे उसे दोषी ठहराने के लिए वहाँ थे, और यीशु उन्हें बहुत शर्मिंदा करने के लिए भी वहाँ थे।

लिटमस टेस्ट यही है। हमें यह जानना होगा कि कौन परमेश्वर के नियम के प्रति वफादार है। और अगर कोई परमेश्वर के नियम के प्रति वफादार है, तो परमेश्वर उसकी स्थिति को मान्य करेगा।

लेकिन आप देखिए, सब्त के दिन चंगाई का सवाल भी, फरीसी जानते हैं कि एक व्यक्ति का इलाज तब किया जा सकता है जब उसकी जान को खतरा हो। और इसलिए यीशु पूछते हैं, हे लोगों, क्या किसी को जीना है या मरना है? हमें क्या करना चाहिए? सवाल यह है कि अगर आप फरीसी हैं, तो आपको जाना चाहिए, हाँ, आप कानून जानते हैं। मेरा मतलब है, कानून कहता है, बेशक, अगर किसी की जान दांव पर लगी है, तो आपको उन्हें चंगा करना चाहिए।

और फिर वह कहता है, मैं उस व्यक्ति को वैसे भी ठीक कर दूंगा। लेकिन ल्यूक जो कुछ और करता है, उस पर गौर करें। ल्यूक कहता है, उस व्यक्ति की घटना उसके दाहिने हाथ से हुई है।

जो हाथ इसके साथ है वह दाहिना हाथ है। यह यहाँ एक और सांस्कृतिक मुद्दा है। जब मैं पहली बार यूरोप गया था, और बाद में अमेरिका गया था, तो मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था, जब चर्च में लोग भगवान की स्तुति करते हैं और अपने बाएं हाथ से इस तरह से जाते हैं।

और मैं अपनी सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के कारण इससे बहुत असहज और परेशान था, क्योंकि बायाँ हाथ बदसूरत, गंदा, अशुद्ध, अपवित्र हाथ है। और क्या आप भगवान के सामने यही दिखाते हैं? और मैं कैमरे पर आपके सामने अपना पाप स्वीकार करूँगा। जब अमेरिका में गर्मियों में, मैंने एक अफ्रीकी के रूप में चर्च में शॉर्ट्स पहने लोगों को देखा, तो यह पहले से ही असहज था।

और फिर वे अपने बाएं हाथ से भगवान की स्तुति करते हैं। अब, जरा सोचिए कि मैं किस दौर से गुज़र रहा था। कितना दर्दनाक अनुभव था।

दर्दनाक बात है। अब, प्राचीन यहूदी संस्कृति की कल्पना करें। बायाँ हाथ बहुत बुरा हाथ है।

यह अशुद्ध है। दाहिना हाथ बहुत-बहुत महत्वपूर्ण हाथ है। इसका इस्तेमाल हर तरह की चीज़ों के लिए किया जाता है।

यह सबसे शक्तिशाली है। यह सबसे योग्य स्थान है। यहां तक कि किसी शक्तिशाली व्यक्ति के दाहिने हाथ पर बैठना भी वास्तविक अधिकार का प्रतीक है।

और यीशु यह तर्क दे रहे हैं कि सूखे हाथ वाले व्यक्ति का दाहिना हाथ, सबसे उपयोगी हाथ जिस पर उसका जीवन निर्भर करता है, सूख गया है। और कोई व्यक्ति आराधनालय में धार्मिक शुद्धता पर बहस करने की कोशिश कर रहा है। यीशु कहते हैं, नहीं, मेरे सामने नहीं।

मैं दिखाऊंगा कि भगवान इसका समर्थन करते हैं। मैं उस आदमी को खड़ा कर रहा था और सामने वाले आदमी को ठीक कर रहा था, सबको चुप करा रहा था। मुझे यह बहुत पसंद है।

मैं यह सुझाव नहीं दे रहा हूँ कि अगर आप पश्चिम में रहते हैं, तो आपको अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। लेकिन मैं दृढ़ता से सलाह देता हूँ कि आप अफ्रीकी देशों, मध्य पूर्वी देशों और एशियाई देशों में अपने बाएं हाथ का इस्तेमाल करने के तरीके के बारे में सावधान रहें। बायाँ हाथ कई अन्य चीजों के लिए बहुत अच्छा हाथ नहीं है।

हममें से कुछ लोग जन्म से ही बाएं हाथ से लिखते हैं और उन्हें दाएं हाथ से लिखना पड़ता है। यह पवित्र हाथ नहीं है। यीशु ने इस व्यक्ति के मामले में अच्छे हाथ को बहाल किया।

अध्याय 6, श्लोक 12 से 16. हम आगे यीशु द्वारा बारहवें को बुलाने के बारे में देखते हैं। यहाँ इस विवरण में, हमें बताया गया है कि यीशु द्वारा बारहवें को बुलाने से पहले प्रार्थना जागरण होगा।

जैसा कि मैंने इन व्याख्यानों में पहले उल्लेख किया था, लूका में, यीशु की सेवकाई में प्रत्येक प्रमुख घटना से पहले प्रार्थना की जाती है। प्रार्थना यीशु या उसके किसी भी अनुयायी के लिए परमेश्वर का चेहरा देखने और यह सुनिश्चित करने का एक महत्वपूर्ण समय है कि वे अगली बड़ी चीज़ के लिए परमेश्वर के साथ संरेखित हों जो होने वाली है। यहाँ, यीशु स्वयं एक प्रार्थना जागरण में शामिल थे।

पाठ हमें कुछ और भी बताता है। यीशु ने बहुत से शिष्यों को बुलाया, लेकिन उसने बारह प्रेरितों को चुना। उसने बहुतों को बुलाया, और उसने बहुतों में से बारह को अपने प्रेरितों के रूप में चुना।

लूका उन बारहवें लोगों का नाम बताता है जिन्हें यीशु अपने प्रेरितों के रूप में चुनेंगे। अब, मान लीजिए, हमने पहले शमौन, ज़ेबेदी भाइयों और लेवी के बारे में बात की है। लूका ने बाकी लोगों का सारांश दिया, बाकी लोगों को सूची में जोड़ा, और कहा, क्या आप जानते हैं? यीशु ने बहुतों को अपने पास बुलाया, और अब उसने इन बारह लोगों को अपने प्रेरितों के रूप में चुना।

यदि आप नए नियम में मत्ती, मरकुस और लूका की सूची देखें, तो कभी-कभी सूची एक जैसी दिखती है, कभी-कभी नहीं। मैं आपको लूका की सूची में एक बहुत ही मामूली बदलाव या विशिष्टता की ओर इशारा करूँगा। लूका में, शिष्यों के नाम में थडियस नहीं है।

आपके पास मैथ्यू और मार्क के लिए यह है, लेकिन ल्यूक के पास यह नहीं है। और फिर भी, मैंने आपको पहले बताया था कि ल्यूक मार्क को जानता था। इसलिए, हम नहीं जानते कि ल्यूक ने इसे क्यों नहीं जोड़ा, लेकिन ल्यूक ने कुछ और किया।

लूका के पास दो यहूदा हैं, जबकि अन्य के पास नहीं हैं। इसलिए, यह संभव है कि दूसरा यहूदा थादेस हो। लूका याकूब के बेटे, यहूदा के रूप में योग्य है।

और फिर, बेशक, दूसरा यहूदा, यहूदा इस्करियोती। यीशु द्वारा चुने गए प्रेरितों की सूची देने के बाद, लूका उस बड़ी सभा के बारे में बात करता है जिसके बारे में लोग यीशु की सेवकाई में जागरूक होने जा रहे हैं। और यह वह हमें अध्याय 6 की आयत 17 से आयत 19 में बताता है।

और मैंने पढ़ा, जब वे पहाड़ से नीचे उतरे, तो शिष्य यीशु के साथ एक बड़े समतल क्षेत्र में खड़े थे, उनके बहुत से अनुयायी और भीड़ उनके चारों ओर थी। यहूदिया के सभी हिस्सों से लोग थे। याद रखें, मैंने कहा था कि वे इस समय गलील में हैं।

लोग पूरे यहूदिया से, खास तौर पर यरूशलेम से, और सुदूर उत्तर से, जैसे कि टायर और सीदोन के समुद्र तट से आए थे। वे उसे सुनने आए थे, अपनी बीमारी से चंगे होने के लिए। दुष्टात्माओं से परेशान लोगों को चंगा किया गया।

हर कोई उसे छूने की कोशिश करता था क्योंकि उससे उपचार की शक्ति निकलती थी, और उसने सभी को चंगा किया। यीशु, इन सभी जगहों से इन लोगों की भीड़ को लेकर, अब वह शुरू करेंगे जिसे हम मैदान पर उपदेश कहेंगे। मैदान पर उपदेश उन विषयों और विषयों को दर्शाता है जो मैथ्यू के पर्वत पर उपदेश में शामिल हैं।

जब मैं लूका के पास आता हूँ और लूका को पढ़ाता हूँ, तो लूका के उपदेश के बारे में मुझे जो बात सबसे अच्छी लगती है, वह यह है कि कभी-कभी वे इतने शक्तिशाली होते हैं कि मैं उन्हें पढ़ना चाहता हूँ। मैं उन्हें जोर से पढ़ना चाहता हूँ ताकि देख सकूँ कि वे लूका के विषय से किस तरह संबंधित हैं। तो, चलिए लूका 6:20 से शुरू करते हैं। और उसने अपने शिष्यों की ओर देखा, और कहा, धन्य हो तुम जो दीन हो, क्योंकि परमेश्वर का राज्य तुम्हारा है।

धन्य हैं तुम जो भूखे हो, क्योंकि तुम तृप्त होगे। धन्य हैं तुम जो अब रोते हो, क्योंकि तुम हँसोगे। धन्य हैं तुम जब लोग तुमसे घृणा करते हैं, और जब वे तुम्हें बहिष्कृत करते हैं, और तुम्हारी निंदा करते हैं, और मनुष्य के पुत्र के कारण तुम्हारे नाम को बुरा कहते हैं।

उस दिन आनन्द मनाओ और आनन्द से जियो। क्योंकि देखो, तुम्हारे लिए स्वर्ग में बड़ा प्रतिफल है। उनके पूर्वजों ने भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया था।

आप स्क्रीन पर जो कुछ भी देखते हैं, उसे देखते हैं, और आप देखते हैं कि मैथ्यू के विपरीत, जहाँ वह कहता है, धन्य हैं वे जो आत्मा में गरीब हैं, लूक में, वह इसे व्यक्तिगत बनाता है, और वह इसे दूसरे व्यक्ति के संदर्भ में बनाता है। वह कहता है, धन्य हैं तुम जो गरीब हो। यह धन्य नहीं है वे जो धार्मिकता के लिए भूखे और प्यासे हैं, लेकिन यहाँ धन्य हैं वे जो भूखे हैं।

धन्य वे नहीं हैं जो शोक मनाते हैं, बल्कि यहाँ वे लोग हैं जो अभी रोते हैं। लूका जो हो रहा है उसे व्यक्तिगत रूप से बताता है। और इस उपदेश में कुछ मुख्य बातों पर प्रकाश डालता है।

वह अपने उपदेश में दो तरह के लोगों की ओर इशारा करते हैं: वे जो धन्य हैं और वे जो दुःखी हैं। और फिर वह श्रोताओं को चुनौती देता है, जैसा कि मैं कुछ मिनटों में पढ़ूँगा, कि वे अपने शत्रुओं से प्रेम करें और दया दिखाएँ। लूका के लिए, यीशु उन्हें आंतरिक चरित्र विकसित करने के लिए चुनौती देंगे।

जैसा कि हॉवर्ड मार्शल ने लूका के सुसमाचार की टिप्पणी में लिखा है, धर्मोपदेश अपने विषय को बारीकी से जुड़े सत्रों की एक श्रृंखला में विकसित करता है, जिसमें कैचवर्ड का उपयोग किया जाता है ताकि समग्र रूप से एकता हो, कि पूरा जोर भगवान के गरीब, उत्पीड़ित लोगों को दिए गए आशीर्वाद, मनुष्य द्वारा प्रेम और दया दिखाने की आवश्यकता और आज्ञाकारिता के एक बुनियादी, आंतरिक दृष्टिकोण की आवश्यकता पर है। आइए हम लूका के वृत्तांत का अनुसरण करते हुए एक सैर करें। यहाँ, मैं केवल शब्दों की शक्ति पर निर्भर रहना चाहता हूँ और उन्हें ज़ोर से पढ़ना चाहता हूँ।

लूका लिखता है, " परन्तु तुम पर हाय जो धनवान हो, क्योंकि तुम अपनी शान्ति पा चुके हो। हाय तुम पर जो अब तृप्त हो। दूसरे शब्दों में, गरीब धन्य हैं, परन्तु जो धनवान हैं, उन पर हाय।

जो भूखे हैं वे धन्य हैं, लेकिन तुम पर हाय जो भरे हुए हैं, क्योंकि तुम भूखे रहोगे। हाय तुम पर जो हँसते हो। इसके बजाय तुममें से जो शोक करते हैं वे धन्य हैं, क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे। हाय तुम पर जब लोग तुम्हारे बारे में अच्छा बोलते हैं, क्योंकि तुम्हारे पूर्वजों ने झूठे भविष्यद्वक्ताओं के साथ भी ऐसा ही किया था।

मैं यहाँ पर कुछ कहना चाहूँगा, मैं जल्द ही 27 से पढ़ना शुरू करूँगा, लेकिन कृपया, कृपया, जब आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, तो पद 26 को याद रखें, हाय तुम पर जब सभी लोग तुम्हारे बारे में अच्छा बोलते हैं। हाय तुम पर जब हर कोई तुम्हें पसंद करता है। पद 27, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ जो सुनते हैं, अपने शत्रुओं से प्रेम करो, जो तुमसे घृणा करते हैं उनके साथ अच्छा व्यवहार करो, जो तुम्हें शाप देते हैं उन्हें आशीर्वाद दो, जो तुम्हें गाली देते हैं उनके लिए प्रार्थना करो, जो तुम्हारे गाल पर थप्पड़ मारे, उसका दूसरा गाल भी आगे कर दो।

और जो तुम्हारा लबादा छीन ले, उससे अपना कुरता भी मत छीनना। जो तुमसे माँगे, उसे दो और जो तुम्हारा सामान छीन ले, उसकी निंदा मत करो, उसे वापस मत माँगो। और जैसा तुम चाहते हो कि दूसरे तुम्हारे साथ करें, सुनहरा नियम लागू होता है: उनके साथ वैसा ही करो।

ल्यूक यहाँ कुछ शक्तिशाली बातों को छू रहा है, जो परमेश्वर के राज्य में धन्य लोगों और उन लोगों के बीच एक तीव्र अंतर को दर्शाता है जिनके लिए उसने दुःख कहा। जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता है, ऐसे विद्वान हैं जिन्होंने लगभग गरीबी धर्मशास्त्र का निर्माण करने की कोशिश की है, यह कहने के लिए कि ओह, शायद ल्यूक यह कहने की कोशिश कर रहा है कि गरीब होना बेहतर है। अरे, अगर सब कुछ ठीक चल रहा है, तो आपके साथ कुछ बुरा है।

कृपया, मुझे नहीं लगता कि ल्यूक यही कह रहा है। आखिरकार, ल्यूक थियोफिलोस को लिख रहा है, जो एक सर था। ल्यूक बस दिल के रवैये, उदारता जो कोई अपना सकता है, और वह

जीवनशैली जो कोई जी सकता है, के मूल्य को इंगित करने की कोशिश कर रहा था, जो समाज में लोगों के साथ व्यवहार करने के तरीके के सापेक्ष है।

याद रखें, वह यह कहने की कोशिश नहीं कर रहा है कि अगर आप काम कर सकते हैं और भगवान आपको आशीर्वाद देंगे, यह एक बुरी बात है। नहीं, आखिरकार, जब वह कहता है कि दे दो, या कोई आपसे लबादा लेता है, तो यह उन लोगों से आना चाहिए जिन्हें देने में सक्षम होना चाहिए। यह उन लोगों से आ सकता है जिनके पास लबादा है ताकि वे उन लबादों को दे सकें।

लूका किसी भी तरह से गरीबी के धर्मशास्त्र का समर्थन नहीं कर रहा है, लेकिन वह यीशु की शिक्षाओं में एक केंद्रीय मुद्दे और संतुलन को छू रहा है। ईश्वर आशीर्वाद देता है, लेकिन ईश्वर आशीर्वाद देता है ताकि हम एक आशीर्वाद बन सकें। ईश्वर ने हमें बनाया और स्थापित किया है, लेकिन उसने हमें अलग-थलग करके नहीं बनाया और स्थापित नहीं किया।

उन्होंने हमें इसलिए स्थापित किया ताकि हम अपने जीवन में दूसरों के जीवन को भी बेहतर बना सकें। चाहे वह क्षमा हो जो दी जाती है, चाहे वह सहायता प्रणाली हो जो दी जाती है, यही वह शिक्षा है, जो यहाँ चल रही शिक्षा का आधार है। और निश्चित रूप से, श्लोक 31, जो सुनहरे नियम को रेखांकित करता है या जो सुनहरा नियम बन गया है जिसे कन्फ्यूशियस दोहराता है, ग्रीक दार्शनिक दोहराते हैं, और यीशु की शिक्षाओं में, हमें दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए जैसा हम चाहते हैं कि दूसरे हमारे साथ करें।

मूल रूप से, यीशु पहाड़ी उपदेश में इसे स्थापित कर रहे हैं। अध्याय 6 की आयत 32 से, वह पहाड़ी उपदेश, क्षमा करें, मैदानी उपदेश जारी रखते हैं, और वे यह कहते हुए आगे बढ़ते हैं, यदि तुम उनसे प्रेम करते हो जो तुमसे प्रेम करते हैं, तो इससे तुम्हें क्या लाभ है? क्योंकि यदि तुम पापियों से प्रेम करते हो जो उनसे प्रेम करते हैं, और यदि तुम उनसे भलाई करते हो जो तुम्हारा भला करते हैं, तो इससे तुम्हें क्या लाभ है? पापी भी ऐसा ही करते हैं। और यदि तुम उन लोगों को उधार देते हो जिनसे तुम वापस पाने की उम्मीद करते हो, तो इसमें तुम्हारा क्या श्रेय है? पापी भी पापियों को उधार देते हैं ताकि वे उतनी ही राशि वापस पा सकें।

लेकिन अपने शत्रुओं से प्रेम रखो, और भलाई करो, और बदले में कुछ पाने की आस न रखकर उधार दो, और तुम्हारा फल बड़ा होगा, और तुम परमप्रधान के पुत्र ठहरोगे। जैसे वह कृतघ्नों और बुरों पर दया करता है, वैसे ही तुम भी दया करो, जैसा तुम्हारा पिता दयावान है। न्याय न करो, तो तुम पर भी न्याय नहीं किया जाएगा।

निन्दा न करो, तो तुम भी निन्दा नहीं पाओगे। क्षमा करो, तो तुम्हें भी क्षमा किया जाएगा। दो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा।

अच्छा नाप, दबाओ, झुको, भर दो, तुम्हारी गोद में डाल दिया जाएगा। जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए नापा जाएगा। उसने एक दृष्टान्त भी बताया।

क्या अन्धा अन्धों को मार्ग दिखा सकता है? क्या वे दोनों गड़हे में नहीं गिरेंगे? चेला अपने गुरु से बड़ा नहीं होता, परन्तु जो कोई पूरी रीति से प्रशिक्षित हो जाता है, वह अपने गुरु के समान होगा।

तू अपने भाई की आंख का तिनका क्यों देखता है, और अपनी आंख का लट्टा तुझे क्यों नहीं सूझता? तू अपने भाई से कैसे कह सकता है, कि हे भाई, मैं तेरी आंख का तिनका निकाल दूँ, जब कि तू अपनी आंख का लट्टा नहीं देखता? हे कपटी! पहिले अपनी आंख से लट्टा निकाल, तब तू अपने भाई की आंख का तिनका भली भाँति देखकर निकाल सकेगा।

मैदान पर उपदेश के इस भाग का अंतिम भाग बहुत ही रोचक है, इसलिए मैं इसे चित्रित करना चाहता हूँ। यीशु दूसरों के सापेक्ष मानवीय व्यवहार को सिखाते और चुनौती देते हैं। एक ऐसे व्यक्ति के रूप में जो एक बड़ई के घर में बड़ा हुआ था जो लकड़ियों और धब्बों से बहुत परिचित था, वह लकड़ियों और चूरा का उपयोग उन लोगों के खिलाफ चेतावनी देने के लिए करता था जो खुद को बेहतर इंसान बनने में मदद करने के लिए आत्म-मूल्यांकन नहीं कर सकते हैं और जो दूसरों को गलत काम करने के लिए जल्दी आंकते हैं।

आप चेतावनी दे रहे हैं कि शायद बेहतर विकल्प यह होगा कि आत्मनिरीक्षण किया जाए, खुद की जाँच की जाए, जो बुरा या दुष्ट है उससे छुटकारा पाया जाए, तभी जाकर किसी के पास विश्वसनीयता होगी, अगर दुस्साहस नहीं। किसी दूसरे व्यक्ति को उसके गलत कामों के बारे में बताना। इसलिए, जब आप इन व्याख्यानों का अनुसरण करते हैं, तो कल्पना करें कि ऐसी कुछ चीजें हैं जिन पर आपको काम करना है, जिन पर आपने अभी तक काम नहीं किया है।

लेकिन आप किसी को ऐसा करते देखते हैं, और आप तुरंत अपना अपराध उस पर मढ़ने और उस व्यक्ति पर गलत काम करने का आरोप लगाने के लिए दौड़ पड़ते हैं। यीशु कहते हैं, रुको। और मैं आपको स्क्रीन पर दिखाता हूँ कि वह किस तरह का चित्रण कर रहा है।

यीशु यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि यह आपकी आँख पर लट्टा रखने और लोगों का न्याय करने के लिए हथौड़ा लेने जैसा है। जबकि, वास्तव में, आपकी आँख पर लट्टा ऐसा है कि आप उस धूल के कण को देख सकते हैं, जो किसी की आँख में गिर गया हो। यीशु एक अद्भुत शिक्षक हैं और वह हमें अपनी ओर से गलत चीजों को देखने की चुनौती देते हैं।

जैसा कि एक लेखक ने कहा था, हम दूसरों को उनके कामों से आंकना पसंद करते हैं। और हम उन्हें क्या करते हुए देखते हैं। लेकिन जब हम खुद पर आते हैं, तो हम अपने इरादों से खुद को आंकने की कोशिश करते हैं।

इसलिए, हम यह कहने की कोशिश करते हैं कि मैं ऐसा क्यों कर रहा हूँ, इसके पीछे कोई अच्छा कारण है। यीशु ने कहा, नहीं, यह इस तरह से काम नहीं करता। आत्मनिरीक्षण करें।

अपने दिल और दिमाग की जाँच करें। अपने आचरण की जाँच करें। अपनी आँख में पड़े लट्टे को ठीक करें।

ऐसा किए बिना, आप दूसरे पर धब्बे को स्पष्ट रूप से नहीं देख सकते। और यदि आप ऐसा करने का प्रयास करते हैं, तो आप पाखंडी होंगे, जैसा कि पाठ में कहा गया है। सादे उपदेश में इसे स्पष्ट रूप से स्थापित करने के बाद, यीशु लूका के प्रवचन में अध्याय 7 में अपनी करुणा और अपनी

करुणा सेवकाई का प्रदर्शन करने के लिए आगे बढ़ेंगे। वह जो चीजें चाहता है, वह जो रवैया चाहता है कि लोग अपनाएं, वह खुद लोगों तक पहुंचने के तरीके से इसका प्रदर्शन करेगा।

मुझे उम्मीद है कि हम इससे और खुद यीशु से कुछ सीख रहे हैं। लेकिन आइए इस बारे में और अधिक देखना शुरू करें कि वह अपनी करुणा कैसे प्रदर्शित करेगा—अध्याय 7। यहाँ, मैं अध्याय 7 में श्लोक 1 से 10 तक एक सूबेदार के दास की चंगाई से शुरुआत करना चाहूँगा।

उस वृत्तान्त में, हम देखते हैं कि एक सूबेदार के पास एक गुलाम होगा जो अच्छा नहीं कर रहा है। जैसे ही आप पाठ उठाते हैं और पाठ को ध्यान से देखते हैं, हम अन्य पाठों को पढ़ेंगे, इसलिए हम इसे पढ़ना छोड़ देंगे। आप देखेंगे कि हम जिस व्यक्ति के बारे में बात कर रहे हैं वह एक गुलाम है।

और फिर भी, इस अंश में, एक जगह पर सूबेदार उस दास को एक बच्चे के रूप में संदर्भित करता है। वह एक सैन्य अधिकारी है जो वास्तव में उस दास से प्यार करता है। हम यह भी सीखते हैं कि यह सूबेदार, वैसे, जो एक गैर-यहूदी है और यहूदी नहीं है, लूका हमें संकेत दे रहा है कि यीशु अब एक गैर-यहूदी के साथ व्यवहार कर रहा है।

यहूदियों के बीच उसकी इतनी बड़ी प्रतिष्ठा है कि जब उसे लगा कि वह यीशु के पास आने के योग्य नहीं है, तो उसने अपने यहूदी मित्रों को उसके लिए मध्यस्थता करने के लिए भेजा। हमें बताया गया है कि इन अन्यजातियों ने यहूदियों से कहा कि वे यीशु से कहें कि वह वास्तव में उसके पास व्यक्तिगत रूप से आने के योग्य नहीं है। लेकिन उसके लिए आए यहूदियों ने यीशु से कहा कि यह व्यक्ति यहूदियों से प्रेम करता है।

इस हद तक कि उसने यहूदियों के लिए एक आराधनालय भी बनवाया। सूबेदार प्रवचन में अपना स्थान यह कहकर स्थापित करेगा कि एक अधिकार प्राप्त व्यक्ति के रूप में, वह जानता है कि अधिकार क्या ला सकता है। दूसरे शब्दों में, यदि अधिकार प्राप्त लोग बोलते हैं, तो प्रजा सुनती है।

अगर अधिकार वाले लोग आज्ञा देते हैं, तो चीजें प्रभावी होती हैं। वह कहेगा कि वह अधिकार वाला व्यक्ति है, और वह जानता है कि यीशु के पास अधिकार है। अगर यीशु ने एक शब्द बोला, तो उसके सेवकों का भला होगा।

यदि यीशु अपने अधिकार में बात करते, तो हाँ, विषय पर प्रभाव का अनुभव होता। लूका के इस वृत्तान्त में यीशु ने स्वीकार किया कि वह आश्चर्यचकित है और वह एक गैर-यहूदी के विश्वास से चकित है जो केवल बोलने और चीजों को घटित करने के लिए कहता है। यीशु अपनी करुणा का प्रदर्शन कर रहे थे, और फिर भी लूका में, वह यह भी दिखा रहे हैं कि उनका मंत्रालय यहूदी सीमाओं से परे गैर-यहूदियों के जीवन को छूने के लिए जाता है।

लूका 7, पद 11 इसके तुरन्त बाद वह नाईन नामक नगर में गया, और उसके चेले और बड़ी भीड़ उसके साथ थी। जब वह नगर के फाटकों के पास पहुंचा, तो देखो, लोग एक मरे हुए मनुष्य को

बाहर ले जा रहे थे, जो अपनी मां का एकलौता पुत्र था। वह विधवा थी, और नगर से बहुत से लोग उसके साथ थे।

और जब प्रभु ने उसे देखा, तो उसे उस पर तरस आया और उससे कहा, मत रो। तब उसने पास आकर भालू को छूआ, और उठानेवाला चुपचाप खड़ा रहा, और कहा, हे जवान, तब उठानेवाला चुपचाप खड़ा रहा, और कहा, हे जवान, मैं तुझ से कहता हूँ, उठ। और वह मरा हुआ उठ बैठा, और बोलने लगा।

यीशु ने उसे उसकी माँ को सौंप दिया। और सब पर भय छा गया। और महिमावान परमेश्वर ने कहा, “हमारे बीच एक बड़ा भविष्यद्वक्ता उठा है और परमेश्वर ने अपने लोगों पर कृपा दृष्टि की है।”

उसके बारे में यह रिपोर्ट पूरे यहूदिया और आस-पास के सभी देशों में फैल गई। यह एक ऐसी घटना है, जो सामान्य परिस्थितियों में, बहुत, बहुत, बहुत समय की हकदार है। हम इसे संक्षिप्त बनाने की कोशिश करेंगे।

यहाँ, हमें बताया गया है कि एक विधवा ने अपना बेटा खो दिया है। लूका द्वारा पहले बताई गई बात की समानता को समझना महत्वपूर्ण है, जब यीशु नासरत में था, एलिय्याह और एलिय्याह की सेवकाई की स्थिति के साथ। और यहाँ, भीड़ भी कहने जा रही है, वाकई बहुत बढ़िया, हमारे बीच एक भविष्यवक्ता आया है।

आप देखिए, गलील में ऐसा लगता है कि यीशु एक अविश्वसनीय भविष्यसूचक सेवकाई कर रहे हैं। यह वह भविष्यसूचक सेवकाई नहीं है जो आजकल अफ्रीका में चल रही है। जहाँ हर कोई खुद को भविष्यवक्ता कहता है।

और वे आते हैं, और जाहिर है, उनके पास कुछ दूरदर्शिता होती है कि वे क्या कहते हैं और वे सभी तरह की बातें कहते हैं, मैं कौन होता हूँ यह कहने वाला कि वे झूठे हैं? लेकिन वे शायद इसके करीब हों। लेकिन लूका ने यहाँ यीशु को एक भविष्यवक्ता के रूप में चित्रित किया है। और वह कुछ ऐसे काम कर रहा था जो एलिय्याह और एलीशा ने अपनी सेवकाई में किए थे।

दूसरी बात जो आपको इस कहानी में देखनी चाहिए वह यह है कि हम जिस व्यक्ति से बात कर रहे हैं वह एक विधवा है। फिर से, मैं इस श्रृंखला में एक सांस्कृतिक मुद्दे को समझाने के लिए यहाँ रुकता हूँ। विधवा और यहूदी विधवा होने का मतलब है कि घर में पुरुष व्यक्ति ही भरण-पोषण, देखभाल और सुरक्षा के लिए जिम्मेदार होता है।

और घर का कमाने वाला भी वही है। जब पति या कोई बड़ा पुरुष आस-पास नहीं होता, तो आस-पास का कोई बड़ा पुरुष जिम्मेदारी उठाता है। कल्पना कीजिए कि इस महिला ने अपने पति को खो दिया है।

तो यहाँ, उसके पास अपने जीवन में मदद करने के लिए कोई तत्काल व्यक्ति नहीं है। लेकिन उसका एक बेटा था। और कल्पना कीजिए कि जीवन में उसकी सारी उम्मीदें और आकांक्षाएँ, यहाँ तक कि शायद उसका समर्थन तंत्र भी, किसी तरह इस बेटे से जुड़ा हुआ है।

ल्यूक हमें यह बताना चाहता है कि वह सिर्फ़ बेटा नहीं था। ल्यूक हमें बताता है कि वह सिर्फ़ इसलिए इकलौता बेटा था। यह एहसास दिलाना कि यह एक ऐसा आदमी है जो इस महिला की मदद कर सकता है।

और इसलिए, इस महिला का पूरा जीवन उसके सामने कुचलने के लिए आ गया है। ल्यूक की कहानी में, एक विधवा के बारे में सुनना जो अपने इकलौते बेटे को दफनाने के लिए बाहर निकली थी, आज शायद हमारे लिए उतना मायने नहीं रखता। लेकिन हम एक ऐसी महिला के बारे में बात कर रहे हैं जिसकी संपत्ति ढह रही है।

यीशु करुणा दिखाएगा। यीशु इस महिला के जीवन के बारे में कुछ करेगा। करुणा से, जैसा कि लूका लिखता है, उसने सबसे पहले महिला को सांत्वना दी।

और सांत्वना के बाद, उसने उस युवक को फिर से जीवित कर दिया। यीशु न केवल दयालु था, बल्कि उसके पास मरे हुआँ को फिर से जीवित करने की शक्ति थी, और उसने अभी-अभी इसका प्रदर्शन किया था। वाह।

हमें बताया गया है कि जब उसने ऐसा किया, तो उसने एक और व्यक्तिगत स्पर्श दिखाया जो आपको लूका में मिलता है। उसने लड़के को लिया, और उसने लड़के को माँ को वापस दे दिया। आप देखिए, मुझे लूका में यीशु की सेवकाई में व्यक्तिगत स्पर्श पसंद है, जहाँ वह उन सभी लोगों पर हाथ रखता है जो उसके पास बीमार होकर आते हैं।

वह एक कोढ़ी को छूएगा जो मदद के लिए पुकारता है। एक मृत व्यक्ति के मामले में, वह उस व्यक्ति को जीवित कर देगा, और वह खुद उस बच्चे को लेकर उस माँ को देकर एक व्यक्तिगत स्पर्श देगा, जो कुछ सेकंड पहले अपने बेटे के खोने पर रो रही थी। एक व्यक्तिगत स्पर्श के साथ यीशु की सेवकाई।

हमें बताया गया है कि भीड़ की प्रतिक्रिया बहुत बड़ी थी। जब उन्होंने कहा, चलो, आज हमारे बीच एक पैगम्बर आया है। हम जो कुछ अपने सामने देख रहे हैं, वह पैगम्बरों के बारे में हम जो जानते हैं, वही है।

लूका हमें बताता है कि भविष्यवक्ता यीशु, भविष्यवक्ता मसीहा, गलील में कार्य कर रहे हैं। और अंदाज़ा लगाइए क्या? यहूदिया से दूर-दूर से आने वाले लोग यह देखना शुरू कर रहे हैं कि वह यहीं क्या कर रहे हैं। मैं यहाँ रुककर आपको थोड़ा प्रोत्साहित करना चाहूँगा।

हो सकता है, अपने जीवन में, आप महसूस कर रहे हों कि आपका जीवन बर्बाद हो रहा है। हो सकता है कि अपने जीवन में, आप कुछ कठिन परिस्थितियों से निपट रहे हों। अब तक, मैंने आपका ध्यान उस यीशु की ओर आकर्षित किया है।

यीशु लोगों तक पहुँचता है और दया दिखाता है। यीशु लोगों को जानता है कि वे कहाँ हैं और सही समय पर उनसे मिलता है ताकि उन्हें प्रोत्साहन, उपचार और पुनर्स्थापना का स्रोत मिल सके। क्या मैं आपको अपनी स्थिति में यीशु पर भरोसा करने के लिए प्रोत्साहित कर सकता हूँ?

हो सकता है कि वह किसी मृत प्रियजन को जीवित न कर पाए, लेकिन वह आपकी परिस्थिति में आशा की किरण जगा सकता है। हो सकता है कि वह शारीरिक रूप से आपके पास न हो या आपको छूने के लिए किसी को शारीरिक रूप से न लाए, लेकिन वह आपकी पुकार सुनने के लिए उपलब्ध है। उस दिन, विधवा ने अपने जीवन को बदलते हुए देखा।

हाँ, उसने अपने पति को खो दिया था, लेकिन उसके जीवन में कुछ ऐसा हुआ था। कुछ मिनट पहले, उसने सोचा कि उसकी दुनिया तबाह हो गई है क्योंकि उसके जीवन का एकमात्र आदमी चला गया था। लेकिन यीशु ने कहा नहीं।

यीशु ने कहा नहीं। उसने लड़के को जीवित वापस लौटा दिया। आप जानते हैं, सूबेदार के दास की तरह, यीशु अभी भी निराशाजनक परिस्थितियों में जीवित रहते हुए बोल रहे हैं।

और वह आपके लिए भी ऐसा कर सकता है। मैं नहीं चाहता कि आप इस श्रृंखला को मेरे साथ सिर्फ एक बौद्धिक अभ्यास के रूप में देखें। लेकिन मैं आशा करता हूँ कि आप अपने दिल खोलकर सुसमाचार की शक्ति को इस तरह अपनाएँ।

क्योंकि जब यीशु यह कार्य कर रहे हैं और हम उन्हें अपने जीवन में भी कार्य करने देते हैं, तो हम परमेश्वर के राज्य की व्यापक कथा के लाभार्थी बन जाते हैं और वास्तविकता में उनका अनुभव करते हैं। अध्याय 7, श्लोक 18 से 23 में, यीशु के सामने एक प्रश्न आएगा। और वह इस प्रश्न का उत्तर प्रदान करेंगे।

जॉन के शिष्यों को उसकी सेवकाई के बारे में पता चलेगा। जब जॉन को बताया जाएगा, तो वह उन्हें यह सवाल पूछकर वापस भेजेगा कि यीशु उन्हें यह जानने में मदद कर सकता है कि क्या वह वही है या उन्हें किसी और की उम्मीद करनी चाहिए। जिस विषय के बारे में मैंने अभी आपको बताया है कि यीशु आपकी स्थिति में हस्तक्षेप करने में सक्षम है, मैं आपको याद दिलाना चाहता हूँ कि इस चरण में, यीशु डोनाल्ड बैपटिस्ट को यह संदेश भेजने जा रहे हैं कि घोषणापत्र में कोई बदलाव नहीं हुआ है।

गलील में यशायाह को पढ़ते समय उसने जो कहा था, वह नहीं बदला है। क्योंकि अध्याय 7, आयत 22 से 23 में उसने कहा कि उन्हें यह संदेश यूहन्ना को वापस भेजना चाहिए। उसने कहा, वापस जाओ और यूहन्ना को बताओ कि तुमने क्या देखा और क्या सुना है।

उन्होंने कहा कि अंधे दृष्टि प्राप्त करते हैं। लंगड़े चलते हैं। कोढ़ रोगी शुद्ध होते हैं।

बहरे सुनते हैं। मृतक विधवा के बेटे के समान जिलाए जाते हैं। और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है।

और उसने कहा, धन्य है वह हर कोई जो मेरे कारण ठोकर नहीं खाता। वाह। अब मैं इसे स्क्रीन पर साथ-साथ रखता हूँ ताकि आप देख सकें कि यह उस घोषणापत्र से कैसे संबंधित है जिसे उसने यशायाह अध्याय 4, श्लोक 18 में पढ़ा था, जब वह कहता है, जीवित परमेश्वर की आत्मा मुझ पर है क्योंकि उसने मुझे गरीबों को खुशखबरी सुनाने के लिए अभिषेक किया है।

अंधों को दृष्टि मिले। शोषितों को मुक्ति मिले। प्रभु के प्रसन्नता के वर्ष का प्रचार करो।

यीशु। यीशु इस मुद्रा में नहीं आते, और मैं यह सब जानता हूँ। मेरे पास यह शक्ति है।

मैं तुम्हें डराने वाला हूँ। नहीं, नहीं। वह कोमल और दयालु हृदय के साथ आता है।

लेकिन उसकी सेवकाई के बारे में कोई ग़लती न करें। वह आता है। शोक करने वालों को सांत्वना देने के लिए।

बीमारों को चंगा करना। जरूरतमंदों को आजादी और दृष्टि वापस दिलाना। हां, उनका ध्यान केंद्रित है।

उसने सेवकाई का स्वरूप नहीं बदला है। जैसा कि लूका समझाता है। 7, आयत 27 से 28.

यूहन्ना कहेगा कि यह वही है जिसके विषय में लिखा है।

जब उसने चेलों से सुना, तो उसने कहा, देखो, क्षमा करें, यीशु यूहन्ना के विषय में यह कहेगा।

उसी के विषय में लिखा है, कि देख, मैं अपने दूत को तेरे आगे भेजता हूँ, जो तेरे लिये मार्ग तैयार करेगा।

मैं तुमसे कहता हूँ कि स्त्रियों से जन्मे लोगों में से कोई भी यूहन्ना से बड़ा नहीं है। फिर भी जो परमेश्वर के राज्य में सबसे छोटा है, वह उससे बड़ा है। यीशु की सेवकाई जारी रहेगी। हम यूहन्ना की सेवकाई के बारे में नहीं सुनेंगे।

जैसे-जैसे हम यीशु को आगे बढ़ते देखेंगे, सार्वजनिक स्थान पर यूहन्ना की प्रमुखता कम होती जाएगी।

मंत्रालय में संपन्नता। मैं इसे पढ़ने जा रहा हूँ। इस विशेष व्याख्यान को समाप्त करने का प्रयास कर रहा हूँ।

मैं आपका ध्यान अध्याय 7 की 29 से 35 वीं आयत की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। कृपया इसे पढ़ते समय धैर्य रखें।

हम इस विशेष व्याख्यान को समाप्त करेंगे। और फिर हम एक बहुत ही विवादास्पद चर्चा शुरू करेंगे।

चंगाई के बारे में। एक विशेष महिला के बारे में जिससे यीशु ने अपने मंत्रालय के दौरान संपर्क किया था।

अध्याय 7, श्लोक 21 में मैं तुमसे कहता हूँ, जो स्त्रियों से जन्मे हैं, उनमें यूहन्ना से बड़ा कोई नहीं है।

फिर भी परमेश्वर के राज्य में जो सबसे छोटा है, वह उससे बड़ा है। जब सब लोगों ने यह सुना।

और कर वसूलने वाले भी। उन्होंने परमेश्वर को न्यायी घोषित किया। उन्हें बपतिस्मा दिया गया था।

यूहन्ना के बपतिस्मा के साथ। लेकिन फरीसियों और वकीलों ने अपने लिए परमेश्वर के उद्देश्य को अस्वीकार कर दिया।

फिर मैं इस पीढ़ी के लोगों की तुलना किस से करूँ? और वे किसके समान हैं? वे बाज़ार में बैठे हुए बच्चों के समान हैं।

और एक दूसरे को पुकारते रहे। हमने तुम्हारे लिए बाँसुरी बजाई। और तुम नाचे नहीं।

हमने डच गीत गाया। और तुम रोए नहीं। क्योंकि यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला बिना रोटी खाए और बिना दाखरस लिए आया है।

और तुम कहते हो कि उसमें शैतान है। आदमी का बेटा खाता-पीता आया। और तुम कहते हो कि उसे देखो।

वह पेद्रू और शराबी है। कर वसूलने वालों और पापियों का मित्र है। फिर भी बुद्धि अपने सभी बच्चों द्वारा न्यायसंगत है।

मैं इस श्रृंखला को यहीं समाप्त करता हूँ। क्या मैं आपको हमारे साथ सीखने की इस यात्रा को जारी रखने के लिए प्रोत्साहित कर सकता हूँ?

क्या मैं आपको प्रोत्साहित कर सकता हूँ कि आप अपना ध्यान यीशु मसीह पर केन्द्रित रखें?

क्या मैं आपको प्रोत्साहित कर सकता हूँ कि आप उन आरोप लगाने वालों में शामिल न हों जो मनुष्य के पुत्र पर हर तरह की छवियाँ थोपना पसंद करते हैं?

लेकिन क्या मैं आपको विश्वास हासिल करने और हमारे साथ इस यात्रा पर चलने के लिए प्रोत्साहित कर सकता हूँ ताकि हम एक साथ मिलकर परमेश्वर को काम करते हुए देख सकें?

न केवल हमारे जीवन में बल्कि उसकी दुनिया में भी। हमारे माध्यम से हम साधन बन जाते हैं। जिसका उपयोग वह कई अन्य जीवन को छूने के लिए करता है।

भगवान आपको आशीर्वाद दें और आपका दिन मंगलमय हो। धन्यवाद।

यह डॉ. डैन डार्को और ल्यूक के सुसमाचार पर उनकी शिक्षा है। यह सत्र 9 है, गलील में यीशु का मंत्रालय, भाग 3, यीशु की शिक्षा और चमत्कार।